ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

आधुनिक प्रवृत्ति का द्योतक 'बाघ'

[1]डॉ0 अवधेश कुमार शुक्ला
[1]सह प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 07 Jan 2019, Accepted: 13 Jan 2019 ; Published on line: 15 Jan 2019

Abstract

पुस्तक ''बाघ'' केदारनाथ सिंह जी द्वारा लिखित लम्बी कविता है। इसका पहला प्रकाशन स्वतन्त्र काव्य संस्करण के रुप में 1996 में हुआ। यद्यपि इससे पहले बाघ शीर्षक कविता 1984 में प्रतिनिधि कविताएँ में छपी थी। इससे पहले भी बाघ यत्र–तत्र केदार जी की कविताओं में विषय के रुप में अपना स्थान बना चुका था जैसे 'जमीन पक रही है' काव्य संकलन की अंतिम कविता सादा पन्ना में बाघ का उल्लेख कविता के मूल्य को बढ़ाता है जैसे–

''गौर से देखो
वहाँ दो भूरी आँखें चमक रही है
एक खूबसूरत बाघ के बालो की लहक
फैली है तुम्हारी मेज पर
हाथ बढ़ाओ
और उन हिस्त्र बालो में अपनी ऊँगलियाँ फिराओं
यहाँ भय की कोई बात नही''

उनका दूसरा काव्य संग्रह 'यहाँ से देखो' में जानवर शीर्षक कविता में भी बाघ विद्यमान है जिसका वर्णन कवि इस प्रकार करते है

''देखो देखो
उसके पुट्ठे दिखाई पड़ रहे है
शायद कान
शायद गर्दन
शायद गर्दन के पास की धारियाँ''

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाघ ने कवि के मन को अपने पूर्ण सौन्दर्य के साथ अभिभूत किया था इसलिए बाघ केवल बाघपन और इंसानपन ही नही बल्कि सौन्दर्य का एक पूर्ण प्रतीक बनकर

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

उपस्थित हुआ है। सन् 1984 से 1996 तक बाघ कवि के दिमाग पर छाया रहा और कविता में अपेक्षित संशोधन परिवर्तन होता रहा। इस 12 वर्ष की अवधि में कविता तपकर बाघ की तरह शानदार और विभावन व्यापार सम्पन्न हो उठी। बाघ कवि केदार जी की निरन्तर बदलती सोच व संघर्ष का परिणाम है। यही कारण है कि वह अपने में पूर्ण है यह बाघ इक्कीसवीं सदी के दरवाजे पर दस्तक की तरह है वह अचानक आता है लोगों में एक संदेह बना रहता है पर कही एक विश्वास भी है कि बाघ कही भी आ सकता है।

''आज सुबह के अखबार में
एक छोटी सी खबर थी
कि पिछली रात शहर में
आया था बाघ !
किसी ने उसे देखा नही
अंधेरे में सुनी नही किसी ने
उसके चलने की आवाज
गिरि नही थी किसी भी सड़क पर
खून की छोटी सी भी एक बूँद
पर सबको है विश्वास
कि सुबह के अखबार में छपी हुई खबर
छपी हुई खबर
गलत नही हो सकती''[1]

बाघ यहाँ गतिशीलता का प्रतीक है जो भिन्न–भिन्न सन्दर्भों में अपनी गति के कारण भिन्न–भिन्न ध्वनियाँ अर्जित करता है। बाघ का निर्माण अर्न्तजीवन के सकारात्मक तत्वों द्वारा हुआ है। अर्न्तजीवन व आत्मीयता के कारण ही बाघ में प्रेम व घृणा दोनों के भाव परिलक्षित होते है। अतः केदार जी की कविता बाघ में अन्तरजीवन को बाहरी जीवन व्यापार में व्यक्त करने के लिए मनुष्य के सचेत प्रयास को अत्यधिक मान्यता प्रदान की गयी है। इसी सन्दर्भ में सुधीश पचौरि जी का कथन द्रष्टव्य है''

[1] बाघ– केदारनाथ सिंह– पृष्ठ सं0–11

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

मनुष्य की यातना के समकालीन और ऐतिहासिक सन्दर्भ जैसे राजा का हॉका और लोमड़ी के द्वारा बाघ को ईश्वर लिखना सिखाया जाना कविता में बाघ के अकथ दुःख का कारण बनते है खण्ड 7 में ईश्वर के साथ जुड़ी मनुष्य की सारी ऐतिहासिक पीड़ा और घर की कार्मिकता बाघ के साथ और चालाक लोमड़ी के साथ जुड़ती है। इस अनुभव के कारण बाघ के राज से कविता में आदमी का अन्तर्लोक गूँजता दिखता है''।[2] आधुनिकता व राजनीतिक प्रतिबद्धता के संदर्भ में बाघ जीवन्तता का उदाहरण है। वह स्वयं में ही गति व स्पन्दन का प्रतीक है। वह जब कथा की ओर बढ़ जाता है तो उसे ढूँढ पाना मुश्किल है–

''एक कथा है बाघ भी
इसलिए कई बार
जब उसे छिपने को नही मिलता
कोई ठीक ठीक जगह
तो वह धीरे से उठता है
और जाकर बैठ जाता है
किसी कथा की ओट में
फिर चाहे जितना ढूँढो
चाहे छान डालो
जंगल की पत्ती–पत्ती
वह कही मिला ही नही''[3]

बाघ कविता में बाघ आधुनिकतावादी प्रवृत्ति का द्योतक है। 'बाघ आया है शेर नही'। यहाँ बाघ ग्रामीण भावबोध को सारगर्भित करता है जबकि शेर शब्द वीरता का आयाम प्रस्तुत करता है। वैसे तो बाघ और शेर में अर्थभेद नही है पर ध्वनि व शब्दोत्पत्ति के भेद से अर्थ अलग–अलग ध्वनित होता है। शेर शब्द प्रायः शहर के मुहावरों में प्रयुक्त होता है, जबकि बाघ गाँव के मुहावरों में रचा बसा है।

बाघ परम्परागत मूल्यों व रुढ़ियों से आगे निकल कर भविष्य की ओर विकासोन्मुख है वह वर्तमान से निकलकर भविष्य का साक्षात्कार करना चाहता है। 'बाघ' गतिशीलता व विकासोन्मुखता

[2] उत्तर केदार– सुधीश पचौरि– पृष्ठ सं0–157
[3] बाघ– केदार नाथ सिंह– पृष्ठ सं0–15

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 01, Jan 2019

का प्रतीक है बाघ के माध्यम से सम्पूर्ण ग्रामीण वातावरण भी गतिशील प्रदर्शित होता है, उस पूरे दृश्य को देखकर बाघ की प्रतिक्रिया केदार जी की विशिष्ट दृष्टि की परिचायक है यथा–

''पहले वह गुर्राया
फिर हो गया चुप
क्योकि उसने सुना
वह बूढ़ा वट वृक्ष
आदमी के कानो के पास झुककर
धीरे–धीरे गा रहा था
एक बहुत पुराना गीत''[4]

बच्चन सिंह का एक कथन यहाँ द्रष्टव्य है ''यू तो प्रत्येक शताब्दी के दरवाजे पर कोई न कोई दस्तक पड़ती रही है। हर देश के दरवाजे पर पड़ने वाली दस्तक दूसरे देश के दरवाजे पर पड़ने वाली दस्तक से रुप गुण में भिन्न थी। बाघ की दस्तक तो पहली बार पड़ी है जो सारे विश्व को सुनाई पड़ती है क्योंकि विश्व एक गाँव में बदल गया है।..... ज्ञान–विज्ञान के कारण देशकाल की दूरियाँ समाप्त हो गयी है। यह दस्तक मामूली नही, बाघ की दस्तक है। वह एक वैश्विक डर है इसमें पूर्णतः या अंशतः मुक्त होने के लिए सारी दुनिया छटपटा रही है। इस संकट में जीने की कुछ ऐसी शर्ते है जो बीसवीं शताब्दी की ढलान के पहले नही थी। कवि जीने की इन शर्तो पर हस्ताक्षर कर देता है। इसी हस्ताक्षर का नाम है 'बाघ''।[5]

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बाघ ग्रामीण बोध की सशक्त अभिव्यक्ति है जो सामाजिक धरातल पर राजनीतिक वचनबद्धता के साथ परम्परागत रुढ़ियों व मान्यताओं से छुटकारा पाने का प्रयास करती है और इसी वचनबद्धता से नवीनता के प्रति आग्रह व भविष्य के प्रति विकासात्मक मूल्यों का निर्माण करता है।

[4] बाघ– केदार नाथ सिंह– पृष्ठ सं0–25
[5] कथा– मार्च 1997– पृष्ठ सं0–112